B.A. Part-I, History Hons

Paper: I, Unit: 5

पाठ: सिन्ध पर अरब विजय (आक्रमण)

भारत के प्रारम्भिक मध्यकालीन इतिहास में सिन्ध पर अरब आक्रमण और विजय एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। यह भारतीय प्रायद्वीप में प्रथम इस्लामी राज्य था। इसका राजनीतिक महत्व उतना नहीं है जितना कि सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व था। वस्तुतः 8वीं सदी के दूसरे दशक में सिंध पर अरबों का आधिपत्य अस्थायी था और जब सही अर्थों में 11वीं-12वीं सदी में मुस्लिम तुर्कों ने आक्रमण किया, तबतक भारतीय इस्लामी तलवार की चमक को भूल चुके थे। फिर भी सिन्ध पर अरब विजय ने जहाँ एक ओर भारत की विकेन्द्रित राज्य प्रणाली की कमजोरियों को उजागर किया, वहीं दूसरी ओर भारत में इस्लामी प्रसार के नए दरवाजे भी खोले।

सातवीं शताब्दी में अरब में इस्लाम का उदय महज एक नए धर्म का उदय ही नहीं था, अपितु यह एक प्रबल राजनीतिक शक्ति का उदय भी था, जिसे अरब के व्यापारी कबीलों के सरदारों का प्रबल समर्थन हासिल था। अतः इस्लाम के उदय के साथ धर्म प्रसार (जेहाद) के नाम पर साम्राज्य एवं व्यापार विस्तार का एक जोरदार अभियान चला। सिंध पर अरब आक्रमण इसी अभियान का हिस्सा था। अतः यह माना जा सकता है कि सिन्ध पर अरब आक्रमण कोई अप्रत्याशित घटना नहीं था, अपितु धर्म सत्ता, राजसत्ता और अर्थ सत्ता के विस्तार की एक सुचिंतित योजना का क्रियान्वयन था। तात्कालिक तौर पर आक्रमण का कारण समुद्री डाकुओं से अरब व्यापारी जहाजों की सुरक्षा को माना गया।

अतः 8वीं सदी के प्रारम्भ के साथ सिन्ध पर अरब आक्रमणों का सिलसिला चल पड़ा। सिन्ध पर आक्रमण करने वाला पहला अरब सरदार उबैदुल्ला युद्ध में पराजित होकर मारा गया। दूसरे आक्रमणकारी बुदैल का भी यही हाल हुआ। अब बड़ी तैयारी के साथ ईराक के गवर्नर हज्जाज ने एक क्रूर योद्धा मुहम्मद बिन कासिम को सिन्ध पर आक्रमण के लिए भेजा, जो उसका दामाद था। हज्जाज के आदेश पर बीस हजार से भी अधिक प्रशिक्षित मुस्लिम लड़ाके जेहाद के उन्माद में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में 711ई० में सिन्ध पर आक्रमण के लिए ईराक से चल पड़े। इसके लिए खलीफा से पूर्वानुमति ले ली गई थी।

उस समय सिन्ध का राजा दाहिर था, जिससे पहले भी अरबों को दो बार झड़पें हो चुकी थी, जिनमें उन्हें मुँह की खानी पड़ी थी। लेकिन उसका सैन्य संगठन ढीला-ढाला, राज्य की सीमाएँ असुरक्षित और राज्य के अन्दर अनेक राज्यद्रोही थे। एक तरफ जहाँ

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

सभी तरह से एक कमजोर राज्य था, वहीं मुहम्मद बिन कासिम के जोरदार सैन्य तैयारियों के साथ 711-12 में ईरान के रास्ते मकरान पार करते हुए सिन्ध के सीमावर्ती स्थल देवल पहुँचा, जो सिन्ध की राजधानी अरोर से 150 मील की दूरी पर बिल्कुल ही अरक्षित था। दरअसल दाहिर ने अपने राज्य की सीमाओं और सीमावर्ती इलाकों की सुरक्षा का कोई उपाय ही नहीं किया था। यही कारण था कि मुहम्मद बिन कासिम अपनी विजय वाहिनी के साथ बड़ी आसानी से मकरान को पार करते हुए देवल बड़ा धमकी दी। देवल के दुर्ग में चार हजार सैनिकों के साथ सिन्ध के राजा दाहिर का भतीजा था, जिसने कासिम की सेना का डटकर मुकाबिला किया। किन्तु देवल के एक लोभी ब्राह्मण ने कासिम को देवल दुर्ग को भेदने की युक्ति बता दी। परिणामस्वरूप अरबी सेना बड़ी आसानी से देवल के दुर्ग में घुसकर दाहिर के भतीजा को मार डाला और सेना को परास्त कर स्त्रियों तथा बच्चों को दास बना लिया। भारी संख्या में सैनिक मारे गए और जो बचे उन्हें भी दास बना लिया। इस प्रकार देवल दुर्ग पर अरबों का कब्जा हो गया।

देवल से 75 मील की दूरी पर सिन्ध का दूसरा प्रमुख नगर सिऊन था, जिसकी रक्षा का भार दाहिर के पुत्र जयसिंह पर था। सात दिनों की यात्रा कर अरब की सेना इस प्रसिद्ध बौद्ध नगर सिऊन में आसानी से प्रवेश कर गयी। ज्यों ही जयसिंह को मुहम्मद बिन कासिम के सैन्य आगमन की सूचना मिली, वह सिऊन नगर को छोड़कर भाग खड़ा हुआ और बड़ी आसानी से नगर पर अरबों का आधिपत्य स्थापित हो गया।

सिऊन नगर से पूरब व्यापारिक नगर सेहवान था, जिसका रक्षक दाहिर का चचेरा भाई बाझरा था। बाझरा भी जयसिंह की तरह अरब सेना से मुकाबला करने के बजाय भाग खड़े होने में अपनी भलाई समझी, क्योंकि नगर के व्यापारियों और कुछ पुजारियों ने इसे साथ देने से मना कर दिया था। फलतः सेहवान नगर पर भी बिना किसी प्रतिरोध के अरबों का कब्जा हो गया। सेहवान के बाद अगली सिन्ध के जाट बहुल सीसम नगर की बारी थी, जहाँ सिऊन से भागकर आया बाझिरा मोर्चाबंदी किए खड़ा था। परन्तु लड़ाकू जाटों की सेना ने बाझिरा का साथ नहीं दिया और दोनों सेना ने अलग-अलग अरबों का मुकाबला किया। दोनों ही पराजित हुए। बाझिरा मारा गया और जाटों ने थोड़ी लड़ाई के बाद मुहम्मद बिन कासिम की अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार सेहवान में विजय के साथ लड़ाकू जाटों का समर्थन भी हासिल हुआ।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

साहवान विजय के बाद स्वयं सिन्ध के राजा दाहिर की बारी थी, जो ब्राह्मणावाद में मोर्चाबन्दी किए अरबों से मुकाबला के लिए खड़ा था। किन्तु दाहिर का सैन्य संगठन दुरुस्त नहीं था। या फिर उसे यह अनुमान नहीं था कि अरबों की सेना ब्राह्मणावाद भी आ धमकेगी। अतः ज्यों ही अरब सेना ब्राह्मणावाद पहुँची दाहिर अपनी सेना लेकर रावर की ओर बढ़ गया। कासिम इसका पीछा करते हुए रावर पहुँचा, जहाँ 20 जून 712 को दोनों के बीच भीषण युद्ध हुआ। युद्ध के दौरान अरब सेना के तीर से घायल होने के बाद दाहिर मारा गया। इसके बाद दाहिर की पत्नी रानीबाई ने मोर्चा सम्हाला। परन्तु सिन्धु के पराजय से बचा नहीं सकी और इसने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए जौहर व्रत (अग्नि दहन) का अनुगमन कर लिया। नेतृत्व विहीन सेना ने आत्म समर्पण कर दिया। अपने पिता और माता की मृत्यु का समाचार पाकर जयसिंह सेना लेकर ब्राह्मणावाद पहुँचा। परन्तु अपनी स्थिति कमजोर पाकर वह चितुर की ओर भाग गया। अरबों ने आसानी से ब्राह्मणावाद पर भी कब्जा कर लिया। अरबों के लिए अब केवल राजधानी अरोर पर आधिपत्य कायम करना बाकी था, जहाँ दाहिर का दूसरा पुत्र प्रतिनियुक्त था। वह भी कासिम का मुकाबला करने में असमर्थ सिद्ध हुआ और एक आसान युद्ध के बाद अरब सेना का राजधानी अरोर पर कब्जा हो गया। फिर भी अरबों का सिन्ध अभियान पूरा नहीं हुआ था। सिन्ध का एक प्रमुख नगर मुल्तान बाकी रह गया था, जिसे स्थानीय भेदियों की सहायता से 713 में मुहम्मद कासिम ने भेद डाला और इस तरह अरबों का सिन्ध पर विजय का अभियान पूरा हो गया। मुहम्मद बिन कासिम की सफलता और बढ़ती ताकत से खलीफा भय खाने लगा और मक्का बुलाकर उसे मरवा डाला।

712-13 मे सिन्ध पर अरब आक्रमण का उद्देश्य भारत में इस्लामी राज्य की स्थापना था। सिन्ध विजय के बाद उसे दो राज्यों मुलतान और ब्राह्मणावाद में विभाजित सैन्य गवर्नर प्रतिनियुक्त किए गए। भारी तादाद में अरब सैनिक और सिन्धु के नगरों में बस गए। इन्होंने हिन्दुओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध भी कायम किए। इस्लामी रीति के विपरीत सिन्ध के हिन्दुओं को धार्मिक स्वतंत्रता दी गई और युद्ध में ध्वस्त मन्दिरों के पुनर्निर्माण का अनुमति भी प्रदान की गई। परिणामतः सिन्ध पर अरब विजय स्थायी सिद्ध

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

नहीं हो सका। (4)

सिन्ध पर अरब विजय को इतिहासकारों ने भारत के एक छोटे से सीमान्त प्रदेश में बिल्कुल ही अस्थायी इस्लामी उपनिवेश वाला एक साधारण घटना माना है। वैचारिक सम्बन्धों के कारण अरबों को अन्य विदेशियों की तरह भारतीय समाज की एक जाति ही मान लिया गया, जिसमें इस्लामी आक्रामकता ~~बिल्कुल ही स्थायी नहीं~~ लम्बे समय तक कायम नहीं रह सकी। 9वीं सदी के अन्त तक आते-आते सिन्ध खलीफा के नियंत्रण से मुक्त हो गया और भारत के अन्य राज्यों की तरह एक राज्य के रूप में परिगणित किया जाने लगा।

परन्तु अरबों के सिन्ध विजय का राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। सिन्ध में अरबों ने इस्लामी पद्धति के अनुसार प्रशासनिक एवं न्यायिक व्यवस्था कायम की थी। ~~क्योंकि~~ शीर्ष पर अरबों को ही प्रतिनियुक्त किया गया था, परन्तु शासन और नागरिक न्यायव्यवस्था स्थानीय हिन्दू ही संचालित करते थे। सिन्ध एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र के रूप उभरा और इसका आर्थिक विकास हुआ। सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह था कि अरबवासियों ने बौद्ध एवं ब्राह्मण आचार्यों से दर्शन, ज्योतिष, भूगोल, गणित, रसायन शास्त्र आदि का ज्ञान प्राप्त किया। जाहिर है कि सिन्ध पर अरब विजय से भारत को अस्थायी नुकसान हुआ, परन्तु अरब जगत ने भारत से ज्ञान का पाठ सीखा।

प्रभाशंकर जयकिशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी. बी. कालेज, जयनगर।